CAMBRIDGE
International Education

Cambridge IGCSE™

HINDI AS A SECOND LANGUAGE **0549/02**

Paper 2 Listening **February/March 2025**

TRANSCRIPT **Approximately 45 minutes**

This document has **8** pages. Any blank pages are indicated.

© Cambridge University Press & Assessment 2025

FEMALE: अभ्यास 1: प्रश्न 1–6

प्रश्न 1 से 6 के लिए आप क्रमानुसार कुछ संक्षिप्त संवाद सुनेंगे। उनके आधार पर प्रत्येक प्रश्न का उत्तर नीचे दी गई रेखा पर लिखिए। आपके उत्तर जहाँ तक हो सके संक्षिप्त होने चाहिए।

आपको प्रत्येक संवाद दो बार सुनाया जाएगा।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

MALE: संवाद 1

FEMALE: * छात्रो, आज हम आपको लंदन की सैर पर ले चलेंगे। यह सैर हम बस, नाव और साइकिल से भी कर सकते थे। लेकिन हमने पैदल सैर को चुना क्योंकि लंदन जैसे प्राचीन शहर के इतिहास और रहस्यों को पैदल सैर के बिना नहीं समझा जा सकता। पैदल सैर कई तरह की है। शैरलॉक होम्स से जुड़े ठिकानों की सैर, हैरी पॉटर से जुड़े स्थानों की सैर और शाही पार्कों की सैर। इनमें से आप अपने पसंद की सैर चुन सकते हैं। **

[Pause 10 seconds]

MALE: संवाद 2

FEMALE: महिलाः * भैया, क्या है सस्ते दाम पर, आपने बोर्ड लगा रखा है?

पुरुषः बहन जी, आज संतरे हैं नागपुरी, दो के दाम में तीन! या फिर जामुन हैं, आधे दाम पर!

महिलाः लग तो ताज़ा रहे हैं! और ये दशहरी आम?

पुरुषः एकदम शहद हैं बहन जी शहद! ये भी सस्ते लग जाएँगे!

महिलाः अमरस के लिए ठीक रहेंगे?

पुरुषः एकदम बहन जी, उसी के लिए बने हैं। कितने तोल दूँ?

महिलाः ठहरो भी! पहले दाम तो बताओ? जामुन भी लूँगी। **

[Pause 10 seconds]

MALE: संवाद 3

FEMALE: * हैलो सूरज! मैं कल के बारे में बात करना चाहती थी। तुमने कहा था तुम मुझे अपनी कार में ले चलोगे। उसमें थोड़ा बदलाव करना है। मैं तुम्हारा मंदिर के बाहर इंतज़ार करूँगी। मुझे मालूम है तुमने घंटाघर के बाहर आने को कहा था। लेकिन वो सड़क बंद है। घूम कर जाना होगा। तुमने साढ़े आठ बजे मिलने के लिए कहा था। क्या उससे थोड़ा पहले, सवा आठ बजे मिल सकते हैं? कोई दिक़्क़त हो तो मुझे आठ बजे तक बता देना। बाय! **

[Pause 10 seconds]

© Cambridge University Press & Assessment 2025

MALE: संवाद 4

FEMALE: महिलाः * रोहित, आज रसायन विज्ञान की प्रयोग कक्षा कैसी लगी?

पुरुषः मुझे तो बहुत मज़ा आया! पता नहीं मैम इतना क्यों डरा रही थीं?

महिलाः शायद इसलिए कि प्रयोग के उपकरण बहुत जटिल थे।

पुरुषः मैं समझ गया तुम्हारी बात। पहले तो मेरे हाथ से थर्मोमीटर टूटते-टूटते बचा। उसके बाद काँच का जार गिर कर चकनाचूर हो गया।

महिलाः परखनली भी तो कितनी नाज़ुक थी! मुझे तो हैरत हो रही है कि वो नहीं टूटी।

पुरुषः तुम ठीक कहती हो। कुछ छात्र थोड़े अनाड़ी भी हैं। **

[Pause 10 seconds]

FEMALE: संवाद 5

MALE: * आज अंतरराष्ट्रीय श्रम दिवस मनाया जा रहा है। इसे मई दिवस के नाम से भी जाना जाता है। श्रम दिवस की शुरुआत उन्नीसवीं सदी में हुई, जब दुनियाभर के श्रमिकों ने काम के लिए बेहतर परिस्थिति, उचित वेतन और कम घंटे काम करने की माँगें शुरू की थीं। श्रम दिवस भारत, क्यूबा और चीन समेत 80 से अधिक देशों में मनाया जाता है। इस दिन श्रमिकों को उचित मज़दूरी व अधिकार दिलाने और शोषण से बचाने के लिए जलूस निकाले जाते हैं। **

[Pause 10 seconds]

FEMALE: संवाद 6

MALE: पुरुषः * कैसी लगी फ़िल्म, फ़ातिमा?

महिलाः मुझे तो अच्छी लगी जावेद! जज पर ज़रूर ग़ुस्सा आया - पर शायद उसकी भूमिका का मक़सद भी यही था। दूसरी तरफ़ बेचारा पुलिस अफ़सर! कितना कठिन था उसका काम? उसकी भूमिका भी कमाल की थी।

पुरुषः तुमने मेरे मुँह की बात छीन ली। उसका अभिनय लाजवाब था। शुरू में मुझे लगा कि संगीत जमा नहीं। लेकिन बाद में मेरा विचार बदल गया। मुझे केवल फ़िल्म की लंबाई से शिकायत है। इसे छोटा किया जा सकता था।

महिलाः हाँ, मुझे भी यही लगा। **

[Pause 10 seconds]

MALE: यह अभ्यास 1 का अंतिम संवाद था। थोड़ी देर में आप अभ्यास 2 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 2 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।

[Pause 30 seconds]

© Cambridge University Press & Assessment 2025

FEMALE: अभ्यास 2: प्रश्न 7

MALE: महात्मा गाँधी के नारी सशक्तीकरण के विचारों का परिचय कराने वाली इस वार्ता को ध्यान से सुनिए और नीचे छोड़े गए खाली स्थानों (a–h) को भरिए।

यह वार्ता आपको दो बार सुनाई जाएगी।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

FEMALE: * महात्मा गाँधी ने महिला अधिकारों को लेकर आज के चिंतन की नींव बहुत पहले ही रख दी थी। उनका कहना था, 'मैं बेटे और बेटियों के साथ बिलकुल एक जैसा व्यवहार करूँगा। जहाँ तक स्त्रियों के अधिकार का सवाल है, मैं कोई समझौता नहीं करूँगा। नारी पर ऐसा कोई कानूनी प्रतिबंध नहीं लगाना चाहिए जो पुरुषों पर न लगाया गया हो। नारी को अबला कहना उसकी मानहानि करना है। स्त्री और पुरुष एक दूसरे के पूरक हैं। आपसी सहयोग के बिना दोनों का अस्तित्व असंभव है। स्त्री पुरुष की सहचरी है। उसकी मानसिक शक्तियाँ पुरुष से ज़रा भी कम नहीं हैं।'

गाँधी जी महिलाओं को सशक्तीकरण का विषय नहीं बनाना चाहते थे बल्कि उनका मानना था कि महिलाएँ स्वयं इतनी सबल हैं कि ख़ुद के ही नहीं बल्कि संपूर्ण मानव जाति के कल्याण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। उनका कहना था कि अगर महिलाओं को आज़ाद होना है, तो उन्हें निडर बनना होगा। परिवार और समाज के बंधनों को तोड़ते हुए थोपे गए अन्याय का विरोध करना होगा और यही ताकत उन्हें ज़ुल्मों से मुक्ति दिला सकती है। समाज में एक नई पहचान बनाने की हिम्मत दे सकती है।

गाँधी जी देश की प्रगति में महिलाओं को अहम भूमिका निभाने के लिए सदैव प्रेरित करते रहे। उनका कहना था कि महिलाएँ पुरुषों के हाथ का खिलौना नहीं हैं और न ही उनकी प्रतिद्वंद्वी हैं। महिला और पुरुषों में आत्मा एक ही है और उनकी समस्याएँ भी एक जैसी हैं। महात्मा गाँधी ने महिलाओं के शिक्षित होने पर सबसे ज़्यादा ज़ोर दिया। क्योंकि यही वो आधार था जो महिलाओं को पुरुषों के बराबर ले जाकर खड़ा कर सकता था।

गाँधी जी के विचार में महिलाओं को अपने अधिकारों और कर्तव्यों का ज्ञान होना चाहिए और यदि उन्हें सशक्त बनना है, तो इसकी पहल परिवार से ही करनी होगी। ग़लत बातों को जब तक वो सहेगी, उसके साथ ज़ुल्म होता रहेगा। उन्होंने कहा था, जिस दिन एक महिला रात में सड़कों पर निडर होकर चलने लगेगी उस दिन हम कह सकते हैं कि भारत ने स्वतंत्रता हासिल कर ली है। **

[Pause 30 seconds]

MALE: अभ्यास 2 की यह वार्ता अब आप फिर से सुनेंगे।

[Pause 3 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 30 seconds]

FEMALE: अभ्यास 2 अब समाप्त हुआ। थोड़ी देर में आप अभ्यास 3 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 3 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।

[Pause 30 seconds]

© Cambridge University Press & Assessment 2025

MALE: **अभ्यास 3: प्रश्न 8–15**

FEMALE: **फ़िल्म निर्माता रचना शंकर के साथ पत्रकार राहुल बोस की बातचीत को ध्यान से सुनिए और नीचे दिए गए प्रत्येक कथन में रेखांकित की गई ग़लती को सही शब्दों या वाक्यांश का प्रयोग करते हुए ठीक कीजिए।**

यह बातचीत आपको दो बार सुनाई जाएगी।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

MALE: राहुलः * रचना शंकर जी, वसुन्धरा कार्यक्रम में आपका स्वागत है।

रचनाः धन्यवाद राहुल जी।

राहुलः रचना जी, सुना है आप दुनिया के सबसे बड़े नदी द्वीप माजुली पर फ़िल्म बना रही हैं, उसके बारे में थोड़ा बताइए।

रचनाः जी, माजुली पर फ़िल्म बनाने गई थी। लेकिन वहाँ एक ऐसे व्यक्ति से मिलना हुआ कि फ़िल्म अब उनकी कहानी बन गई है।

राहुलः अरे वाह! कौन हैं ये साहब और उन्होंने ऐसा क्या किया है?

रचनाः इनका नाम है जादव पायेंग। माजुली के जीव-जन्तुओं को ब्रह्मपुत्र की बाढ़ से बचाने के लिए जादव ने अकेले दम पर माजुली की लगभग 1400 एकड़ रेतीली पट्टी को हरियाले वन में बदल दिया है। उनके जंगल का नाम मोलाई कोठानी है जिसका मतलब है मोलाई की लकड़ी, क्योंकि जादव को गाँव के लोग प्रेम से मोलाई कहकर बुलाते हैं। इसमें बाँस, साल और सागौन जैसे जंगली पेड़ों के अलावा फलदार पेड़ और औषधियों के पेड़ भी हैं।

राहुलः लेकिन माजुली द्वीप पर तो 23 गाँव हैं जिनमें डेढ़ लाख से भी ज़्यादा लोग रहते हैं। जादव पायेंग को अकेले दम पर यह काम क्यों करना पड़ा? दूसरों ने उनका साथ क्यों नहीं दिया?

रचनाः राहुल जी, ऐसे कामों के लिए धुन और धीरज की ज़रूरत होती है जो सबके पास नहीं होते। वैसे तो हर साल माजुली का आधे से अधिक भाग ब्रह्मपुत्र और उसकी सहायक नदियों की बाढ़ में डूब जाता है। लेकिन तटवर्ती गाँवों में नदियों की धारा के बहाव और उससे होने वाले ज़मीन के कटाव के कारण और अधिक तबाही होती है। इसीलिए ब्रह्मपुत्र को भारत के पूर्वोत्तर का अभिशाप भी कहा जाता है। जादव का गाँव भी नदी किनारे था जहाँ से पढ़ने के लिए वे नदी के दूसरे छोर पर स्थित जोरहाट शहर जाया करते थे।

एक दिन जब वे जोरहाट में दसवीं की परीक्षा देकर बाढ़ का पानी उतरने पर गाँव लौटे तो नदी का तट बाढ़ में मरे जीव-जन्तुओं के शवों से अटा पड़ा था। एकदम मरघट का सा दृश्य था जिसे देखकर जादव को कई रात नींद नहीं आई। एक दिन गाँव की चौपाल में चल रही चर्चा के दौरान किसी ने कहा कि जब पेड़-पौधे ही नहीं रहे तो जीव-जन्तु बाढ़ से कैसे बचें? रेतीले तटों पर न तो कुछ पकड़ने को बचा है न कुछ खाने को।

जादव ने उस बात को पकड़ लिया और उस दिन से गाँठ बाँध ली कि अब वे गाँव में पेड़-पौधे लगाकर ही दम लेंगे। शुरू में लोगों ने साथ देने के बजाय उनका मज़ाक उड़ाया। लेकिन उनपर नई-नई पौध लगाने की धुन सवार हो गई। देखते ही देखते कुछ सालों के भीतर उन्होंने 1400 एकड़ ज़मीन में पेड़ लगाकर एक हरा-भरा जंगल खड़ा कर दिया।

राहुलः जीव-जन्तुओं का क्या हुआ और क्या इस जंगल की देखभाल भी जादव ही करते हैं?

© Cambridge University Press & Assessment 2025

रचनाः जादव का जंगल भाँति-भाँति के जीव-जन्तुओं का बसेरा बन चुका है। इसमें प्रवासी और देशी पक्षियों के साथ-साथ पाँच से अधिक बाघ, जंगली हाथी, गैंडे, जंगली सूअर और सौ से अधिक हिरण विचरण करते हैं। यह सैंकड़ों प्रकार की वनस्पतियों का ख़ज़ाना भी है। यूनेस्को ने पूरे माजुली द्वीप को ही उसकी सांस्कृतिक और प्राकृतिक सुंदरता के कारण विश्व धरोहरों में शामिल कर लिया है। भारत सरकार ने जादव पायेंग को विश्व का सबसे बड़ा मानव रोपित वन लगाने के लिए पद्मश्री से सम्मानित किया है। उनके काम की वजह से माजुली पर्यटन और प्रकृति प्रेमियों के आकर्षण का केंद्र बन चुका है।

राहुलः रचना जी, रोचक जानकारी के लिए धन्यवाद और आपकी फ़िल्म के लिए शुभकामनाएँ।

रचनाः धन्यवाद। **

[Pause 30 seconds]

MALE: अभ्यास 3 की यह बातचीत अब आप फिर से सुनेंगे।

[Pause 3 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 30 seconds]

FEMALE: अभ्यास 3 अब समाप्त हुआ। थोड़ी देर में आप अभ्यास 4 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 4 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।

[Pause 30 seconds]

MALE: अभ्यास 4: प्रश्न 16–23

FEMALE: ई-शिक्षा और स्कूली शिक्षा पर दो वक्ताओं की बातचीत को ध्यान से सुनिए और निम्नलिखित वाक्यों को पूरा करने के लिए A, B अथवा C में से किसी एक विकल्प को सही [✓] का निशान लगा कर चुनिए।

ये बातचीत आपको दो बार सुनाई जाएगी।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

MALE: * ई-शिक्षा पाठ्यक्रम में हम घर बैठे कम समय में एक साथ कई विषयों का ज्ञान ले सकते हैं। इसका सबसे बड़ा लाभ यह है कि जो शिक्षार्थी किसी कारणवश अथवा असमर्थतावश नियत समय और स्थान पर जा कर नहीं सीख सकते उनके लिए कक्षा और प्रशिक्षक सप्ताह में सातों दिन और 24 घंटे उपलब्ध हैं। ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से हम देश ही नहीं बल्कि विदेश में दी जाने वाली उपयोगी शिक्षा को भी ग्रहण कर सकते हैं। अपनी गति से किसी भी समय अध्ययन कर सकते हैं और अभ्यास कर सकते हैं। पढ़ने के अलावा छात्र अपने कार्य की समीक्षा कर सकते हैं। यह शिक्षा पद्धति सीखने की तात्कालिक सुविधा ही प्रदान नहीं करती, बल्कि गतिविधियों और परीक्षाओं के परिणामों को देखने की सुविधा भी प्रदान करती है।

FEMALE: शिक्षा केवल तकनीकी और मशीनी प्रक्रिया नहीं है, जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों को सामग्री और सूचनाएँ उपलब्ध करा देने तक सीमित हो। ये एक निरंतर चलने वाली और ज्ञान के लेन-देन की प्रक्रिया है। कहा भी गया है कि विद्यार्थी अपना चौथाई ज्ञान अपने गुरु से प्राप्त करता है, चौथाई अपनी बुद्धि से, चौथाई अपने सहपाठियों से और अंतिम चौथाई अनुभव से प्राप्त करता है। सीखने वाला इन सभी स्रोतों के गुण, धर्म, अनुभव और सार को ग्रहण करके नए ज्ञान, संस्कार और कौशल सीखता है। उन्हें अपने व्यक्तित्व में समाहित करके जीवन के लक्ष्य की ओर बढ़ता है। इसलिए गुरु और सहपाठियों से दूर रहकर हासिल किए ज्ञान का परिणाम भी मशीनी अनुभव या अव्यावहारिक जड़ता के रूप में ही सामने आता है।

© Cambridge University Press & Assessment 2025

MALE: ऑनलाइन शिक्षा वैकल्पिक विचारों को बढ़ावा देती है। यह छात्रों, शिक्षकों, विद्यालयों और विश्वविद्यालयों की गुणवत्ता को माप सकती है। छात्रों के सर्वांगीण विकास को पुरस्कृत करने के लिए एक वस्तुनिष्ठ और मानक पैमाना देती है। इससे शिक्षण की अन्य गतिविधियों – संगोष्ठी, कार्यशाला, राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय सम्मलेन आदि के आयोजन को अत्यंत उपयोगी, उत्पादक और किफ़ायती बनाया जा सकता है। जो जहाँ है, वहीं से इन गतिविधियों में भाग ले सकता है, जिससे आने-जाने में व्यय होने वाले श्रम, समय और धन को बचाया जा सकता है। परिवहन में जलने वाले ईंधन के प्रयोग को सीमित करते हुए प्रदूषण को कम करके पर्यावरण को भी संरक्षित किया जा सकता है।

FEMALE: कक्षा में बच्चों को संस्कार तथा जीवन मूल्य भी सिखाये जाते हैं, जो कि ऑनलाइन संभव नहीं हैं। यह एकपक्षीय व्यवस्था है जिसमें वार्तालाप और संवाद की सीमित गुंजाइश और संभावना है। इससे शिक्षार्थी की समझ तथा बौद्धिक विकास प्रभावित होता है। इसके अलावा, ई-लर्निंग के लिए घर पर अनुकूल वातावरण न होना, छात्रों का ऑनलाइन खेलों तथा सोशल मीडिया में भटक जाना, एकाग्रचित्त न हो पाना और कक्षा का वातावरण न होना जैसी अनेक चुनौतियाँ हैं। सबसे गंभीर और विचारणीय कमी यह है कि अध्यापक विद्यार्थी के बौद्धिक स्तर के अनुसार ज्ञान नहीं दे पाते, क्योंकि वे अपने पाठ या तो रिकॉर्ड करके भेजते हैं या चुने गये प्लेटफ़ॉर्म पर सीधी कक्षाएँ लेते हैं जो सभी के लिए एक समान होती हैं जबकि सब विद्यार्थियों का बौद्धिक स्तर एक समान नहीं होता। परिणाम स्वरूप शिक्षक और विद्यार्थी के बीच मात्र यांत्रिक सम्बन्ध होने से विद्यार्थी कितना ग्रहण कर रहा है और जो वो समझ पा रहा है वह सही है या नहीं, यह जानने के लिए भी अध्यापक के पास उचित व्यवस्था नहीं रहती।

MALE: आज के सूचना क्रांति के युग में डिजिटल शिक्षा ज़रूरी है। परंतु सबसे महत्वपूर्ण यह है कि इसका उपयोग एक निश्चित सीमा तक और किसी की देख-रेख में ही होना चाहिए। जिससे जहाँ इस तकनीक का छात्रों को पूरा लाभ मिले, वहीं उनका मानसिक, शारीरिक और चारित्रिक विकास भी बाधित न हो। कुछ पाठ्यक्रमों और अधिकांश संगोष्ठी और सम्मेलन आदि अकादमिक गतिविधियों को ऑनलाइन करके समय, पर्यावरण तथा संसाधनों को बचाया जा सकता है। पर इसके लिए नई शिक्षण-पद्धतियों का विकास और उसी के अनुरूप शिक्षकों के प्रशिक्षण की व्यवस्था होनी चाहिए। छात्रों के लिए भी समान स्तर पर आवश्यक ससाधन और ढाँचागत सुविधाएँ सुनिश्चित करानी होंगी। ऑनलाइन शिक्षण की एक निर्धारित सीमा होनी चाहिए अन्यथा शिक्षार्थी, शिक्षक और शिक्षा तीनों का ही भविष्य संकट में आ सकता है। **

[Pause 30 seconds]

MALE: अभ्यास 4 की इस बातचीत को अब आप फिर से सुनेंगे।

[Pause 3 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 30 seconds]

FEMALE: अभ्यास 4 और यह परीक्षा समाप्त हुई।
This is the end of the examination.

© Cambridge University Press & Assessment 2025

BLANK PAGE

Permission to reproduce items where third-party owned material protected by copyright is included has been sought and cleared where possible. Every reasonable effort has been made by the publisher (Cambridge University Press & Assessment) to trace copyright holders, but if any items requiring clearance have unwittingly been included, the publisher will be pleased to make amends at the earliest possible opportunity.

To avoid the issue of disclosure of answer-related information to candidates, all copyright acknowledgements are reproduced online in the Cambridge International Education Copyright Acknowledgements Booklet. This is produced for each series of examinations and is freely available to download at www.cambridgeinternational.org after the live examination series.

Cambridge International Education is the name of our awarding body and a part of Cambridge University Press & Assessment, which is a department of the University of Cambridge.

© Cambridge University Press & Assessment 2025